ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

KEY WORDS:

हरियाणा की लोक–कलाओं का जीवन दर्शन

डॉ0 नरेन्द्र सिंह सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) सी.आर.एम.जाट महाविद्यालय हिसार

शोध–आलेख – सार

हरियाणा में अनेक प्रकार के रीति–रिवाजों में उनके साथ विभिन्न प्रकार के लोक गीत जुड़े हुए हैं। इन्हीं लोक गीतों के माध्यम से जनमानस अपने मन के विभिन्न भावों को प्रकट करता हैं। ये लोक गीत रस्म और मौसम के अनुरूप होते हैं, जैसे– फाल्गुन के महीने में मस्ती भरे गीत, बरसात में सावन गीत, कार्तिक में भजन–कीर्तन। इसी प्रकार जन्म, विवाह, खेती तथा अन्य संस्कारों–लगन, हल्दी पर उन्हीं के अनुरूप लोक गीत गाए जाते हैं। ये लोक गीत हरियाणा के लोक कलाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। जब से मनुश्य का जन्म हुआ है, तभी से वह विभिन्न कलाओं में पारंगत हुआ है। यदि हम आदि काल की बात करे तो आदिकाल से ही मानव अपने भावों की अभिव्यक्ति चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करता रहा है। प्राचीनतम् चित्र मनुश्य के विकास को समझनें में सहायक रहे हैं। किसी क्षेत्र विशेश की परंपरा वहां के मानव समूह की उन्नत मानसिक अवस्था उनकी सौन्दर्य प्रवृत्ति व्यवहारिक कलात्मकता एवं धार्मिक अभिव्यक्ति ही वहां की लोक संस्कृति है। मानव–समूह की भाशा–बोली, धर्म, शिल्प, कला सामाजिक पंरपराओं एवं मूल्यों जातीय आदर्शों संस्कारों अनुश्ठानों और लोक–विश्वासों आदि के रूप में उसकी लोक संस्कृति के विविध आयाम दृश्टिगत होते हैं। लोक कलाएं अनुश्ठान संस्कार आदि लोक संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। लोक कलाएं पूरे विश्व को एक सूत्र में पिरोती हैं। हरियाणा राज्य प्राचीन समय से ही पंरपराओं के लिए विख्यात है। ये मान्यताएं तथा परम्पराऐ आज भी लोक प्रतीकों के रूप में इस राज्य में जिंदा हैं। परंतु समय की दौड़ ने इन परम्पराओं पर बुरा असर डाला है।

हरियाणा की उत्पति कहां से हुई इसमें काफी मतभेद हैं। कोई ''हरि'' अर्थात् ''भगवान'' कृष्ण से इसका संबंध जोड़ता है तो कोई अमीरों का स्थल होने से आमरीयाण का बिगड़ा रूप हरियाणा स्वीकार करता है। हरियाणा का सामान्यतः हरिआरण्यक अर्थात् हरि का वन अर्थ भी लिया जाए तो अनुचित नहीं होगा। आधुनिक हरियाणा कुरूवन प्रदेश का भू–भाग है। जो कौरवों ने पाड़वों को दिया था। इसी–प्रदेश में पाडवों ने अपनी इतिहास प्रसिद्ध राजधानी इन्द्रप्रस्थ बसाई थी। इन्द्रप्रस्थ के अलावा चार गांव मांगे थे। जिनमें तिरपत (दिल्ली के पास) सोनीपत, बाघपत तथा पानीपत शामिल थे। इसके आस–पास ही दो छोटे–छोटे ग्राम हैं। पांचवां ग्राम इन्द्रप्रस्थ है। यहां की लोक कलाओं ने अपना विकास कई क्षेत्रों में किया है जैसेः– हरियाणा के लोकगीत, लोक कथाएं, लोक कलाओं में आती हैं।[1]

हरियाणा की लोक कला और संस्कृति

हरियाणा की लोक कलाएं – हरियाणा प्रदेश भारत का वह भूखण्ड है, जिसे ऋग्वैदिक आर्यों ने सरस्वती, दृष्टती तथा आपगा सरीखी सर्व–पाप–प्रठाशिनी नदियों के किनारे यज्ञाग्नि प्रज्वलित कर पावन एवं पवित्र किया है। यह प्रदेश सांस्कृतिक दृश्टि से समृद्ध है तथा विभिन्न कलाओं व सांस्कृतिक गौरव को धारण किए हुए हैं। कला एक बहुत ही व्यापक विधा है जिसके बारे में जानकारी देने के लिए निम्न भागों में विभाजित किया गया हैः–

वास्तु कला

वैदिक साहित्य में भव्य महलों के प्रमाण मिलते हैं। हरियाणा के शहरों की सबसे पुरानी हवेली हिसार में हैं। यह फिरोज शाह तुगलक का महल था जो स्थानीय पत्थर और चूने से बना है। स्थापत्य की दृश्टि से यह तुर्ककला का नमुना है जो कि अमूमन अनगढ़ किंतु तगड़ी, सरल, सहज होती थी।[2]

मूर्तिकला

दूसरी सदी की मूर्तियां लाल पत्थर से बनी है। ये देखने में सुंदर नहीं है। हालंकि कुछ समय बाद अच्छी मूर्तियां बनने लगी, इसकी पुश्टि अमीर, (थानेसर) से प्राप्त सूर्य स्तम्भ पर बनी मूर्तियों से होती है।

भुंग और कुपाण काल की मूर्तिकला

प्राचीनकाल में भी हरियाणा की मूर्तिकला प्रचलित और विकसित थी। हरियाणा में मिली सबसे पुरानी मूर्तियां यक्ष और यक्षिणियों की मूर्तियां हैं। ये पलवल, भादरा, हथीन और फरीदाबाद से प्राप्त हुई हैं। इन लोकप्रिय मूर्तियों को कुओ, तालाबों आदि के किनारे रखा जाता था प्राचीन काल में ऐसी मान्यता थी कि ये अपने आराधकों की रक्षक होती हैं।

हरियाणा की चित्रकला का महत्त्व

हरियाणा में मूर्तिकला की तरह चित्रकला भी प्राचीन काल से प्रचलित है। हरियाणा में मूर्तिकला की दृश्टि से सर्वाधिक विकास गुप्तकाल में हुआ। इस काल से गुफा चित्रों के प्रमाण प्राप्त नहीं हुए हैं, किंतु सैन्धव कालीन चित्रकला के कुछ नमूने मिले हैं। यहां से प्राप्त नमूनों में मृद्भाण्डों पर काले और सफेद रंगों से कई प्रकार की आकृतियां बनी हैं, जो तत्कालीन चित्रकला की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करती हैं। मिताथल व बनावली से सैन्धव कालीन या सिंधु सभ्यता के समय की चित्रित वस्तुएं प्राप्त हुई है, जिनमें काले पुते हुए मृद भाण्डों पर टेढ़ी–मेढ़ी रेखाओं या खड़ी रेखाओं फूल–पतियों के सुंदर चित्र बनाए गए हैं। सातवीं सदी में शासक हर्श के दरबार में अच्छे चित्रकार थे। वह स्वयं भी एक कुशल चित्रकार था। बाण ने हर्श के राजप्रसाद में बने भित्तिचित्रों का भी उल्लेख किया है।[3] 18 वीं सदी के अंतिम चरण में हरियाणा में रेवाड़ी के रावों की छाया में चित्रकला को प्रोत्साहन मिला लेकिन रेवाड़ी में पनपी यह कला राजस्थानी चित्रकला की एक शाखा मात्र ही थी।

हरियाणा राज्य की नृत्य कलाएं

हरियाणा के लोकनृत्य यहां की विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं के प्रतीक हैं। ऐतिहासिक स्त्रोतों से ज्ञात होता है कि वैदिक काल में यहां नृत्यकला काफी उन्नत दशा को प्राप्त हुई थी। तब से निरंतर यहां नृत्य कला का विकास हो रहा है। हरियाणा के प्रमुख नृत्य इस प्रकार हैः–

1. **खेड़ा नृत्य**

यह नृत्य गम के स्थान पर खुशी से किया जाता है। यह परिवार में बुजुर्ग की मृत्यु के समय किया जाने वाले नृत्य है। खेड़ा नृत्य जींद, नरवाना, कैथल, करनाल आदि बांगर के क्षेत्रों में बेहद प्रचलित है।

2. **तीज का नृत्य**

यह नृत्य तीज के त्यौहार के अवसर एक विशेश स्थान पर किया जाता है। इस अवसर पर स्त्रिंया सुंदर–सुंदर परिधान धारण करती हैं। तथा नृत्य व गायन का आयोजन करती हैं।

3. **मंजीरानृत्य**

मंजीरानृत्य मेवात में बड़े–बड़े नग्गाड़ों डफ और मंजीरों के साथ होता है।

4. **धमाल नृत्य**

प्रदेश में पुरूशों का धमाल नामक नृत्य प्रसिद्ध नृत्य है। बीनों, खंजरी, तुम्बे, घड़वे, खड़ताल, ढोलक और बांसुरी की ध्वनि ताल पर धिरकता है यह नृत्य महेन्द्रगढ़, झज्जर में लोकप्रिय है और चांदनी रात में खुले मैदान में इसका आयोजन किया जाता है।

5. **छठी नृत्य**

छट्ठी नृत्य का आयोजन प्रदेश में शिशु के जन्म के छठे दिन स्त्रियों द्वारा रात्रि में किया जाता है। इस समारोह के अंत में उबले चने व गेहूं बांटे जाते हैं।

6. **फाग नृत्य**

यह नृत्य आमतौर पर किसानों द्वारा फाल्गुन महीने में किया जाने वाला मौसमी नृत्य हैं। यह पुरूश तथा स्त्रियों दोनों द्वारा किया जाता है। परंतु कई बार केवल पुरूशों द्वारा भी किया जाता है। इस नृत्य के दौरान स्त्रियां परंपरागत रंग–बिरंगे परिधान पहनती हैं तथा पुरूश रंग–बिरंगी पगड़िया बांधते हैं। यह नृत्य, ताश, नगाड़ा तथा ढोल की थाप पर किया जाता है।

7. **रासनृत्य**

रास नृत्य का संबंध भगवान श्री कृष्ण की रासलीलाओं से जुड़ा होता है। इस नृत्य के मुख्यतः दो प्रकार माने गए है। 1. ताण्डव 2. लास्था। ताण्डव पुरूश प्रधान नृत्य हैं। लास्था स्त्री प्रधान नृत्य है।

8. **सांगनृत्य**

सांगनृत्य सांगों के दौरान दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए सांग कलाकारों द्वारा किया जाता है, यह वीररस प्रधान नृत्य है। तथा इस परंपरा की शुरूआत लगभग 1730 ई0 में हुई थी। डफनृत्य, बीन बांसुरी नृत्य, रतवाई नृत्य, गोगानृत्य, घोड़ी नृत्य, छटी नृत्य हरियाणा में सबसे अधिक प्रचलित नृत्य हैं।[4]

9. **लोकगीत**

हरियाणा के ग्रामीण समाज की विविध रस्मों, रीतिरिवाजों और पर्वों से विभिन्न प्रकार के लोकगीत जुड़े हुए हैं। हरियाणा में लोकगीतों का हरियाणावी लोक साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन का हर पक्ष किसी न किसी रूप में इनसें जुड़ा है। हरियाणा में विभिन्न अवसरों पर लोकगीत गायन की परंपरा है। विवाह संबंधी

लोकगीत अत्यधिक प्रचलित हैं।

काचा कुणबा छोड़ के बाब्बू सुरग लोक में सोगे।
भारत के सब नर–नारी अब बिना बाप के होगे।।
देश के हो रे थे बारां बाट।
बणिया, बाह्मण अर कोई जाट।।[5]

सावन के महीने में तीज का पर्व आता है। तीज के गीतों में कहीं मनोहारी ऋतु का वर्णन है तो कहीं सुसराल में रहने वाली लड़की की विवशता को अभिव्यक्त किया गया है। सावन के अवसर पर गाया जाने वाला लोकगीतः–

''सावन में मेद्या रिमझिम–रिमझिम, बरसें।
मन नै समझाऊँ तो, बैरी जोबन तरसै।।''

सावन मास हरियाणवी लोक संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सावन मास में तीज का त्यौहार हरियाणा में बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। तीज के अवसर पर भाई–बहन के घर उपहार लेकर जाता है, जिसे कोथली कहते हैं। अपने भाई के आगमन की राह निहराती बहनें झूले पर चढ़कर हिलौर लेकर ये गीत गाती हैं–

''बांगां मै पपीहा बोल्या, मैं जाणी कौण आवै सै,
झूले चढ़ के देखन लागी, वो तो बीरा आवै सै।।''

हरियाणा के लोकगीत
किसी भी प्रदेश के रीति–रिवाजों पर उस प्रदेश के लोक गीत निर्भर करते हैं। ये लोकगीत मौसम तथा रस्म के अनुरूप होते हैं। हरियाणा के विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले प्रमुख लोकगीत इस प्रकार है–

होली के गीत
फाल्गुन के महीने में होली से संबंधित 'फाग' के गीत गाए जाते हैं। इन गीतों में हास्य तथा मस्ती का पुट होता है। होली के गीत–

''होली खेल रहे शिव शंकर गौरा पार्वती के संग,
गोरा पार्वती के संग माता पार्वती के संग।।''[6]

सावन के गीत
सावन के महीने में बादल, वर्शा, झूला इत्यादि के गीत गाये जाते हैं।

आया तीज का त्यौहार
आज मेरा बीर आवैगा
सामण में बादल छाए
साखियां ने झूलें पाए
मैं कर लूं मौज बहार
आज मेरा बीर आवैगा।[7]

विवाह के गीत
विवाह के अवसर पर विभिन्न प्रकार के मंगलगीत पर गाए जाते हैं। इस अवसर पर पारिवारिक निकट संबंधी ननद–भाभी, देवरानी, सास–बहु, पहीर–ससुराल इत्यादि से संबंधित हास–परिहास के गीत गाए जाते हैं। लड़की के विवाह पर 'सुहाग' के गीत तथा लड़के के विवाह पर 'घोड़ी के गीत गाए जाते हैं।

धार्मिक गीत
विभिन्न धार्मिक व पारम्परिक अवसरों पर एवं कार्तिक माह इत्यादि धार्मिक महीनों में ''लोकधुनों में कई भजन'' इत्यादि गाए जाते हैं।

हरियाणा राज्य की कलाओं में कवियों का महत्त्व
हरियाणा की धरती पर अनेक महान सोच रखने वाले व्यक्तियों का जन्म हुआ है जैसे गरीबदास, प0 लखमीचन्द, मांगेराम, फौजी मेहर सिंह, हरिकेश, पटवारी, भारत भूशण सांघीवाल, बाजे भक्त।

इन्होंने ही जीवन मूल्य पर आधारित हरियाणवी साहित्य की रचना की उस समय के समाज व आगे आने वाले सामज की सभी परिस्थितियों का वर्णन किया है कहा गया है कि प0 लखमीचद जी को हरियाणा साहित्य का त्रिलोकी कहा गया है उसने तीन लोकों पर आधारित साहित्यिक रचनाएं की है।

हरियाणा के सभी साहित्यकारों ने जीवन मूल्य पर आधारित सभी प्रकार के सामाजिक आर्थिक व जीवन मूल्यों का वर्णन विस्तार से किया है जैसे–

गुरू की महता
सभी सन्त कवियों ने गुरू को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। प0 लख्मीचंद जी ने गुरू को ईश्वर से भी बड़ा माना है तथा नितानन्द जी ने भी गुरू की महिमा का वर्णन किया है वे गुरू को ईश्वर–प्राप्ति का मार्ग बताने वाला पथ–प्रदर्शक कहते हैं। गुरू ही ज्ञान रूपी काजल लगाकर मन की आंखों रूपी कपाट खोलते है तथा साधक को बुरे मार्ग से हटाकर सद्मार्ग पर लगाते है जैसे–

''इस दुनियां मैं सब तै ऊँचा, हो सै दरजा गुरूवा का।
कई जन्म तक नहीं उतरता, भाइयो करजा गुरूवां का।[8]

शिक्षा पर बल
विद्या और शिक्षा के बारे में भारत के धर्म ग्रन्थों में पर्याप्त सामग्री प्राप्त हो जाती है। संस्कृति के असंख्य मंत्रों में शिक्षा का प्रतिपादन किया गया है। विशेशकर भर्तृहरि ने विद्या के महत्व पर समुचित प्रकाश डाला है। कवि वत्स ने धन की अपेक्षा विद्या को श्रेश्ठ माना है क्योंकि धन तो नश्ट हो सकता है विद्या नश्ट नहीं होती। यह ऐसी सम्पति है, जिसे भाई बांट नहीं सकता चोर चुरा नहीं सकता और बांटने पर इसकी वृद्धि ही होती है।

देश प्रेम की भावना
सभी प्रकार के साहित्य में हरियाणा के कवियों ने देश प्रेम की भावना पर जोर दिया है उन्होंने कहा है कि जिस देश की धरती पर जन्मे, पले एवं बड़े हुए, उसके प्रति अपने कर्तव्य का पालन करना हमारा नैतिक धर्म है। हमें अपने देश की स्वतन्त्रता की सुरक्षा के लिए अपने जीवन को अर्पित कर देना चाहिए। एक उदाहरण में कविवर भारतभूशण सांघीवाल जी ने हरियाणा के नागरिकों के संबंध में कहा है

''भारत माता के वीर नै, सीख्या नहीं डरणा रै।
जुल्म–अत्याचार का विरोध डट के करणा रै।।
गुलामी की बीमारी तै, तो आच्छा सै मरणा रै।
भारतभूशण मेट दूशण, भवसागर तै तरणा रै।।[9]

बाल विवाह का खण्डन
मध्य युग में भारतवासी बाल–विवाह की परम्परा अपनाने लगे थे। आगे चलकर यह परम्परा लम्बे काल तक चलती रही आज भले ही बाल–विवाह के विरूद्ध कानून भी पास किया जा चुका है। फिर भी ये समस्या ज्यों कि त्यों बनी हुई है। बस्तीराम ने अपने भजनों में बाल–विवाह का खण्डन किया है। उनका विचार है। कि बाल्यावस्था में बच्चों को विद्या पढ़ाई जानी चाहिए। यदि इस आयु में बच्चों का विवाह कर दिया जाता है तो उससे न केवल बच्चों की बल्कि समाज की भी हानि होती है। छोटी उम्र में विवाह करने से बहुत कमजोर और कायर सन्तान पैदा होती है। अतः इस रूढि को त्यागने में ही सबका कल्याण है।

आदर्श जीवन मूल्यों पर बल
अनेक कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से जीवन के आदर्श मूल्यों की अनिवार्यता पर बल दिया है, क्योंकि कवि जानता है आदर्श जीवन–मूल्यों को जीवन में अपनाकर ही एक आदर्श समाज का निर्माण किया जा सकता है इसलिए उन्होंने अहिंसा, ईमानदारी, परिश्रम, कर्तव्यनिश्ठता, उदात, भावनाओं की अपनी काव्य में विस्तारपूर्वक व्याख्या की है उन्होंने यह भी बताया है कि ये आदर्श जीवन–मूल्य तभी लागू किए जा सकते हैं, जब समाज में सुखः शान्ति होगी। आपस में लड़ना–झगडना सदा ही मनुश्य को कमजोर बनाता है। वे सामाजिक एकता के साथ–साथ परिवारिक एकता पर भी बल देते हैं।

''जिस घर में एक्का नहीं, रोज रहै तकरार।
नहीं कदे भी हो सकै, उसका बेड़ा पार।।
उसका बेड़ा पार नहीं हो, दुःख हो मोटा,
लिछमी भाज्जै दूर, कूदता फिरता टोटा।।''[10]

निष्कर्ष
निश्कर्श रूप में हम कह सकते हैं हरियाणा का साहित्य लोक कलाओं, त्यौहारों व परम्पराओं से परिपूर्ण है। यहां हर ऋतु के साथ, लोक गीत, और हर लोकगीत के साथ आमजन के संस्कार व संस्कृति को भलीभांति देखा जा सकता है'' यहां की वेश–भूशा में भी व्यक्तित्व की प्रधानता स्पश्ट झलकती है जो रिश्तों को भी रेखांकित करती है। मानवीय मूल्यों का निर्वाह यहां भी मिट्टी में रचा बसा है। अतः हरियाणा के साहित्य में जीवन मूल्यों से आम जन का जीवन अभिभूत है।

संदर्भ ग्रंथ

1. हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य डॉ0 शंकरलाल यादव पष्ठ–73
2. हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य डॉ0 शंकरलाल यादव पृष्ठ–74
3. डॉ0 शंकर लाल यादव– पृष्ठ 75
4. डॉ0 शंकर लाल यादव– पृष्ठ 76, 77
5. हरियाणा लोक साहित्य – पृष्ठ 19, 20
6. हरियाणा लोक गीत सग्रह – पृष्ठ 23
7. हरियाणा साहित्य दर्पण – पृष्ठ 10, 11
8. भारतभूशण सांगीवाल, रागनी संग्रह
9. हरियाणा साहित्य पृ0 16
10. हरियाणा साहित्य, साम्प्रदायिक सद्भाव पृ0 13